International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 525-526

अंतरानुशासनिक अध्ययन की हिंदी साहित्य में उपादेयता

धीरेन्द्र प्रताप सिंह

शोध-छात्र (हिंदी), इलाहाबाद विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

21 वीं सदी को ज्ञान और विज्ञान के युग के रूप में देखा जा रहा है. कहा तो यह भी जा रहा है कि 21 वीं सदी में ज्ञान का विस्फोट हो रहा है. इस ज्ञान के विस्फोट में अंतरानुशासनिक ज्ञान का अहम योगदान है. अंतरानुशासनिक अध्ययन में अनुशासन शब्द का विशेष महत्व है. वैसे तो सामान्य जीवन में अनुशासन का अर्थ होता है- विनय, व्यवस्था, नियंत्रण, नियमित या नियम बद्ध जीवन. लेकिन अध्ययन के क्षेत्र में अनुशासन एक नई अमेरिकन शब्दावली है, जिसका प्रयोग 'विषय' के लिए किया गया है. अंतरानुशासनिक ज्ञान का केंद्र एक अनुशासन या विषय से परे होता है. अन्य अनुशासनों की तुलना में इसका क्षेत्र बहुत विस्तृत होता है, और इसमें विशेष एवं सारगर्भित तथ्यों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है. अंतरानुशासनिक अध्ययन में ऐसी समस्या या प्रशनों पर ध्यान देते हैं, जो जटिल होती है. अंतरानुशासनिक पहचानने योग्य प्रक्रिया या अन्वेषण का तरीका है. यह अनुशासन के सम्बन्ध में और स्पष्टता लाता है. अंतरानुशासनिक अध्ययन में विशेष निष्कर्ष या सारांश पर ध्यान केन्द्रित करते हैं.

'अंतरानुशासनिक' शब्द को लेकर हरिश्चंद वर्मा लिखते हैं कि- 'अंतर्विद्यावर्ती शब्द अंग्रेजी के 'इंटरडिसिप्लीलनरी' के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है. हिंदी में इसके स्थान पर ' अंतरअनुशासनिक' और अंतर्विषयक या 'अंतरक्षेत्रीय' शब्द भी प्रयुक्त किये गये हैं, किन्तु 'अनुशासन' और 'क्षेत्र' की तुलना में 'डिसिप्लिन' के लिए विद्या शब्द ही सर्वाधिक उपयुक्त है. डॉ फादर कामिल बुल्के ने अपने 'अंग्रेजी- हिंदी कोश' में 'डिसिप्लिन' के लिए विद्या शब्द दिया है. 'वर्ती' (वर्तिन) वर्तनशीलता या व्याप्ति का द्योतक है. इस प्रकार अंतर्विद्यावर्ती शब्द अपने अभिप्रेत अर्थ के सम्प्रेषण में पूर्णत: समर्थ है.'[1]

अंतर-अनुशासन से तात्पर्य अनेक विषयों के ऐसे समूहों से है, जो परस्पर- सम्बद्ध हैं अथवा जिनका समान लक्ष्य है. दरअसल अनुशासन ज्ञान की एक स्वतंत्र शाखा है, जो वैज्ञानिक होती है. अंतरानुशासनिक अध्ययन में दो अनुशासनों के बीच इस प्रकार अध्ययन किया जाता है, जो विषय को सम्पूर्ण बना सके. अंतरानुशासनिक अध्ययन के सन्दर्भ में 'किलीन एवं नेबल' ने 1997 में एक परिभाषा दी कि- 'अंतरानुशासनिक अध्ययन, अध्ययन की एक प्रक्रिया है. इसमें ऐसे प्रश्नों के उत्तर समस्या का समाधान या ऐसे शीर्षक पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है जो अधिक विस्तृत या जटिल है, और उसका समाधान एक अनुशासन या व्यवसाय द्वारा संभव नहीं है... और समाधान के सन्दर्भ में संरचनात्मक या विस्तृत परिप्रेक्ष्य में अपने अंतर्दृष्टि का निर्माण या विकास किया जाता है.'[2]

अंतर अनुशासनिक अध्ययन या ज्ञान की उत्पत्ति को लेकर 'गिल्स गन' के अंग्रेजी लेख ' फ्रॉम वर्क टू टेक्स्ट' का हिंदी अनुवाद इस प्रकार है- 'अंतरानुशासनिक कार्य एक शांतिप्रिय कार्यविधि नही है. असल में यह प्रभावी रूप से तब प्रारंभ होती है, जब पूर्ण रूप से कोई अनुशासन विफल हो जाता है. हो सकता है, यह नए चलन या नए उद्देश्य के फायदे का प्रभाव हो या नई भाषा का जो कि उस ज्ञान का कार्यक्षेत्र नहीं है जो शांतिपूर्ण तरीके से अपना कार्य या मुकाबला करती है. यहाँ एक नए उद्देश्य की आवश्यकता उत्पन्न होती है. जो कि पहले के समूहों को अपने जगह से हटाकर या उसके जगह नए को लाकर प्राप्त किया जा सकता है.'[3]

इससे यह पता चलता है कि ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के मध्य सह संबंध बनाते हुए उसके महत्व को सर्वव्यापी बनाने का कार्य अंतरानुशासनिक अध्ययन से काफी सरल हो जाता है.

अंतरानुशासनिक अध्ययन के सम्बन्ध में 'भारतीय शिक्षा आयोग' का विचार है कि- 'जिन विश्वविद्यालयों में संबद्ध विषयों में पर्याप्त सुसज्जित विभाग हों, उनमे अंतरानुशासनात्मक अध्ययन को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रयतन करना आवश्यक है. इसके लिए विषयों के नवीन समुच्चय, विभिन्न संस्थाओं के मध्य सहयोग के नवीन उपाय और कार्यकर्ताओं के नवीन सांचे आवश्यक होंगे. यह विस्तृत क्षेत्र है, पर दृष्टान्त के रूप में शिक्षा का उल्लेख किया जा सकता है. इसकी समस्याओं का उनकी समस्त जटिलताओं के साथ अध्ययन करने के लिए शिक्षा, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, तुलनात्मक धर्म, अर्थशास्त्र, सरकारी प्रशासन और कानून के विभागों के मध्य अंतरानुशासनात्मक दृष्टिकोण आवश्यक है. भौतिक, रसायन, अथवा इतिहास आदि विश्वविद्यालय का प्रत्येक विषय विभाग अपने-अपने क्षेत्र में विद्यालय की पाठ्यचर्चाओं की समस्याओं पर कार्य कर सकता है. पूर्व- स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर शिक्षा के पाठ्यक्रम अन्य अधिकांश विषयों के साथ सम्मिलित किये जा सकते हैं.'[4]

अकादमिक लोगों के अनुभव में यह बात आ रही है कि, जिन विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में सम्बन्धित विषयों में संपन्न विभाग हों, वहां अंतर-अनुशासनात्मक अध्ययन को बढ़ावा देना चाहिए. इसके लिए विषयों के नवीन विधि के संगठन, विभिन्न संस्थाओं में नवीन प्रकार के सहयोग और नवीन प्रकार के शिक्षकों की आवश्यकता होगी. वो इसलिए भी कि, इस दौर में हम लोग विशिष्टता के युग में जी रहे हैं. इस विशिष्टता को प्राप्त करने के लिए जरुरी है कि हम लोग अपने विषय के अतिरिक्त दूसरे विषय या उसके स्रोत के बारे में जान, समझ सकें. चूँकि अंतर विषयक शोध द्वारा जो भी अध्ययन होता है, वह एक संतुलित अध्ययन कहा जाता है. यहाँ संतुलित अध्ययन का आशय एक ऐसे अध्ययन से है, जिसमें शोध समस्या के प्रत्येक पहलू का अध्ययन पक्ष और विपक्ष दोनों ढंगों से किया जाता है.

दरअसल 1955 ई. के पहले अन्तरानुशासनिक शब्द का प्रयोग नहीं होता था. यही कारण है कि इससे पहले विश्वविद्यालयों द्वारा ' कामायनी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन' या 'प्रेमचंद के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन' जैसे आदि विषय इस टिप्पणी के साथ निरस्त कर दिए जाते थे कि इन विषयों का संबंध हिंदी- विभाग की अपेक्षा समाजशास्त्र और मनोविज्ञान विभाग से अधिक है. किन्तु अब यह स्थिति नहीं है. क्योंकि अंतरानुशासनिक ज्ञान की संकल्पना ने यह सिद्ध किया है कि ज्ञान अखंड है, अत: विविध विधाओं के रूप में ज्ञात ज्ञान की विविध शाखाओं में परस्पर सम्बन्ध है. यह सम्बन्ध सामान्य नहीं अपितु गहन सम्बन्ध है.

जहाँ तक अन्तारानुशासनिक अध्ययन की हिंदी साहित्य में उपादेयता की बात है, तो यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि अंतरानुशासनिक अध्ययन हिंदी विषय के लिए भी सर्वथा अनुरूप है. 'वाक्' पत्रिका, वर्ष 2012 के अंक 12 में संपादक के तौर पर 'सुधीश पचौरी' ने संपादकीय में लिखा कि- 'हिन्दी के विराट जनक्षत्रे में नयी

सदी की बेचैनियाँ और आकांक्षाएँ जोर मार रही हैं। हिन्दी के नये पाठक को अब शुद्ध 'साहित्यवाद' नहीं भाता। वह समाज को उसके समग्र में समझने को बेताब है. साहित्य के राजनीतिक पहलू ही नहीं, उसके समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक पहलुओं को पढ़ना नये पाठक की नयी माँग है. वह इकहरे अनुशासनों के अध्ययनों से ऊब चला है और अन्तरानुशासनिक (इंटरडिसिप्लीलनरी) अध्ययनों की ओर मुड़ रहा है, जहाँ नये-नये विमर्श, उनके नये रंग–रेशे एक दूसरे में घुलते–मिलते हैं. नयी सदी का पाठक ग्लोबल माइंड का है और भूमंडलीकरण, उदारतावाद, तकनीक, मीडिया, उपभोक्ता, मानवाधिकारवाद, पर्यावरणवाद, स्त्रीत्ववाद, दलितवाद, उत्तर–आधुनिक विमर्श, उत्तर–संरचनावादी, चिन्ह, शास्त्रीय विमर्श इत्यादि तथा उनके नये–नये सन्दर्भों, उपयोगों को पढ़ना– समझना चाहता है. थियरीज के इसी 'हाइपर रीयल' में उसे पढ़ना होता है. साहित्य भी इस प्रक्रिया में बदल रहा है.'[5]

ऐसे में हिंदी साहित्य में अंतरानुशासनिक ज्ञान का महत्व पहले से और भी बढ़ा है. इसके साथ ही हमें यह भी ध्यान रखना में रखना चाहिए कि अंतरानुशासनिक शोध साहित्य के शास्त्रीय आधार का प्राण है. हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन काव्य में वेदांत दर्शन के विशिष्टा द्वैतवाद, शुद्धाद्वैत आदि रूपान्तरणों ने भक्ति को सुदृढ़ दार्शनिक पीठिका प्रदान की है. रीतिकालीन साहित्य में कामशास्त्र, काव्यशास्त्र, ज्योतिष- वैद्यक, संगीत आदि शास्त्रों की विशिष्ट भूमिका रही है. छायावादी कवियों ने वेदांत से प्रेरणा ली. प्रगतिवादी कवियों के लिए साम्यवादी चिंतन आधार बना. प्रयोगवादी कवियों ने अस्तित्ववाद, फ्रायडवाद(मनोविश्लेषणवाद), विकासवाद, आधुनिकतावाद आदि से प्रेरणा लिया. युगीन चेतना के प्रणेता के रूप में कबीर, तुलसी, प्रेमचंद एवं यशपाल जैसे लेखक महान समाजशास्त्री प्रतीत होते हैं. जयशंकर प्रसाद अपनी काव्य चिंतन के आधार पर कभी दार्शनिक तो कभी सौन्दर्यशास्त्री प्रतीत होते हैं.

प्राय: यह देखा गया है कि जो कवि या साहित्यकार बोध के विविध रूपों को अपनी अनुभूति में जितने उदात्त, गहन और व्यापक स्तर समन्वित करने में सफल होता है, वह उतना ही प्रतिभाशाली और महान होता है. यही कारण है कि रामायण, महाभारत, रामचरित मानस, सूरसागर, पद्मावत उत्कृष्ट कोटि के ग्रन्थ सिद्ध हुए.

साहित्य के सन्दर्भ से यदि बात करें तो यह कहना उचित ही है कि साहित्य के किसी क्षेत्र या कृति का किसी साहित्येतर दृष्टि या शास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन करना, अंतरानुशासनिक अध्ययन कहलाता है. यदि किसी साहित्यिक रचना में निहित मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, इतिहास, दर्शन, संस्कृति, नीति, भक्ति, पौराणिकता आदि का अध्ययन करना हो तो अंतरानुशासनिक अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है. भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में यदि हिन्दी साहित्य को सर्वव्यापी, सर्वग्राही, सरल, सुबोध एवं सुगम बनाकर प्रत्येक भारतीय तक पहुँचाना हो तो, यह कार्य अंतरानुशासनिक अध्ययन के बिना संभव नहीं दिखता.

अंतरानुशासनिक ज्ञान के विवेचन से यह निष्कर्ष निकल सामने आता है कि इस प्रकार के ज्ञान के अध्ययन से साहित्य का मूल स्वर एवं सर्वांगीणता बोध उभरकर सामने आ सकता है. अब तक साहित्य के क्षेत्र में जिस भी स्तर तक अंतरानुशासनिक अध्ययन की दृष्टि से कार्य हुआ है, उस साहित्य या उस अनुशासन का स्वरुप उतना ही निखरा है. यह देखा जा रहा है कि अंतरानुशासनिक ज्ञान की उत्पत्ति ने विभिन्न विषयों या अनुशासनों को संकरी गलियों से निकाल कर खुले आसमान में विचरण में कराया है. जिससे उन अनुशासनों को एक विस्तृत फलक एवं बहुआयामी स्वरुप मिला है.

सन्दर्भ

1. हरिशचंद वर्मा, शोध प्रविधि, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, सं.- 2011, पृ. सं. – 90
2. About Inter Disciplinary Studies (PART-1)
   Defining inter disciplinary studies, (William H. Newell and William J. Killin) P.N. 14
3. Inter Disciplinary Studies (Gilles Gunn)
   From: Intruduction to scholarship in modern languages and literatures,
   2.ND Edition, ED. Joseph Gibaldi. New York, modern languages association, 1992
4. पारसनाथ राय, अनुसन्धान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, सं.- 2012, पृ. सं. – 231
5. वाक् (त्रैमाषिक), वर्ष- 2012, अंक- 12, संपादक- सुधीश पचौरी